# पांच महान

# अश्वेत अन्वेषक

# पांच महान

# अश्वेत अन्वेषक

# एस्टेबन डोरेंटेस

## प्रारंभिक अमेरिकी एक्सप्लोरर

## (1500 - 1539)

फरवरी 1527 का साल था. पांच बड़े जहाज स्पेन के एक बंदरगाह में इंतजार कर रहे थे. सैकड़ों लोग सवार थे. उनमें सैनिक, बसने वाले और साहसिक कार्य करने वाले लोग भी थे. वे अमेरिका नामक एक नए देश में जा रहे थे. राजा फर्डिनेंड, फ्लोरिडा नामक क्षेत्र का पता लगाने के लिए उन्हें वहां भेज रहे थे.

क्या उन्हें वहां उन्हें धन-दौलत, सोना-चाँदी मिलेगी? क्या वहां खतरे होंगे? इसका उत्तर कोई नहीं जानता था.

बोर्ड पर मौजूद लोगों में एस्टेबन डोरेंटेस नाम का एक युवक था. एस्टेबन का जन्म मोरक्को में, उत्तरी अफ्रीका में हुआ था. एक दिन उसे पकड़कर स्पेन में गुलाम बनाकर लाया गया. एंड्रेस डोरेंटेस उसके मालिक थे. एस्टेबन, डोरेंटेस के साथ नए देश की यात्रा कर रहा था.

अप्रैल 1528 में, अभियान फ्लोरिडा पहुंचा. तीन सौ सबसे मजबूत पुरुषों को नए देश में अंदर जाने के लिए चुना गया. एस्टेबन उन चुने लोगों में से एक था. महिलाओं और बच्चों सहित बाकी लोग जहाज पर ही रहे.

तीन सौ पुरुषों ने अप्रवासी अमेरिकी मूल-निवासियों से मुलाकात की. पुरुषों ने मूल अमेरिकियों के साथ लड़ाई लड़ी. उन्होंने अमेरिकी मूल-निवासियों के गांवों पर हमला किया. अपालाचेन नामक गाँव के योद्धा बहुत ताकतवर और बहादुर थे. वे धनुष और बाणों से लड़े और फिर स्पेनवासी वहां से भागे. कई स्पैनियार्ड मारे भी गए. जो बच गए, उन्होंने जहाजों पर लौटने की कोशिश की.

एस्टेबन और अन्य बचे लोगों ने खतरनाक जानवरों से भरे दलदल से होकर यात्रा की. पुरुषों को बेहद गर्म, उमस भरे मौसम का सामना करना पड़ा. बीमारी पैदा करने वाले मच्छरों के झुंडों ने उन पर हमला किया. हर दिन पुरुषों की मृत्यु बीमारियों, बुखार और भुखमरी से हुई. जहाज उन्हें कहीं दिखाई नहीं दिए .

तब बचे लोगों ने पानी से यात्रा करने का फैसला किया. उन्होंने पांच लकड़ी की नावों का निर्माण किया और उनपर पाल लगाईं. लेकिन वे गलत दिशा में रवाना हुए. वो जिन स्थानों से गुज़रे वे बाद में जॉर्जिया, अलबामा, मिसिसिपी और लुइसियाना के राज्य बने. तीन नावें समुद्र में ही खो गईं. अन्य दो नौकाएं टेक्सास के तट पर दुर्घटनाग्रस्त हो गईं. एस्टेबन उन नौकाओं में से एक में था. उसके मालिक, डोरेंटेस दूसरी नाव में थे. दोनों दुर्घटना में बच गए.

एस्टेबन और उसके बाकी साथियों को कपोकुइस नामक एक मूल अमेरिकी जनजाति ने पकड़ लिया. लगभग पाँच वर्षों तक, खोजकर्ता अमेरिकी मूल-निवासियों के कैदियों के रूप में रहे. अंत में केवल चार खोजकर्ता एंड्रेस डोरेंटेस, अल्फोंसो डेल कैस्टिलो माल्डोनल्डो, कैबेजा डी वेका और एस्टेबन ही बचे.

एस्टेबन एक स्मार्ट कैदी था. उसने मूल अमेरिकी लोगों के साथ मित्रता बनाई. उसने उनकी भाषा सीखी, और उनके देश के बारे में सीखा. 1534 में, एस्टेबन, डोरेंटेस, डी वेका और माल्डोनल्डो कैद से भाग निकले. उन्होंने मैक्सिको सिटी में एक स्पेनिश बस्ती में जाने का फैसला किया.

एस्टेबन ने जंगल के रास्ते का नेतृत्व किया. उसने अमेरिकी मूल-निवासियों के तौर-तरीकों को करीबी से देखा था, इसलिए वह जानता था कि भोजन कैसे खोजा जाए और जंगली जानवरों से कैसे सुरक्षित रहा जाए. उसने यात्रा में अपने साथियों को जीवित रखा.

एस्टेबन ने अमेरिकी मूल-निवासियों के साथ जल्दी ही दोस्ती बना ली. उसने उनकी भाषाओं को आसानी से सीख लिया. वो कम-से-कम छह मूल अमेरिकी भाषायें जानता था.

महीनों बीत गए. एक साल बीत गया और फिर दो साल. लेकिन तब भी एस्टेबन ने मेक्सिको सिटी खोजने की उम्मीद नहीं छोड़ी.

1500 के दौरान मेक्सिको सिटी का एक चित्र.

अंत में, 1536 में, वे चारों लोग मैक्सिको सिटी पहुंचे. यात्रा के दौरान उनकी भेंट स्पेन के सैनिकों के साथ हुई. वही स्पेनिश सैनिक उन्हें शहर में लेकर गए.

फिर चारों आदमियों ने मेक्सिको सिटी के लोगों को अपनी महान साहसिक खोज और कारनामों के बारे में बताया.

बहुत कम श्वेत या अश्वेत लोगों ने पहले नई भूमि के इतने विस्तृत क्षेत्र का पता लगाया था. तब तक एस्टेबन और उसके साथी तीन हजार मील की यात्रा कर चुके थे.

मेक्सिको सिटी के लोगों ने खोजकर्ताओं का "हीरो" जैसे स्वागत किया. एस्टेबन को इसमें बहुत आनंद आया. लेकिन उसके दिमाग में एक अहम सवाल था. यात्रा के दौरान, वो और उसके साथी एक-समान थे. लेकिन अब उसका क्या होगा? उसने अचरज किया. क्या उसे एक आजाद इंसान माना जाएगा? या फिर वो गुलाम ही रहेगा? जल्द ही उसे अपना जवाब मिल गया.

एस्टेबन ने कई बार डोरेंटेस की जान बचाई थी. एस्टेबन बहुत साहसी और बुद्धिमान था. उसने देश भर में कठिन यात्राओं का नेतृत्व किया था. लेकिन डोरेंटेस अभी भी इस बहादुर एक्सप्लोरर को एक गुलाम ही मानता था. डोरेंटेस ने एस्टेबन को मेक्सिको सिटी के गवर्नर को बेच दिया.

लेकिन एक खोजकर्ता के रूप में एस्टेबन के दिन अभी भी खत्म नहीं हुए थे. उसे "सात सोने के शहर " खोजने के अभियान का मार्गदर्शन करने को कहा गया. इस यात्रा पर उसने उस जमीन का पता लगाया जो आज एरिज़ोना और न्यू मैक्सिको है.

एस्टेबन ने संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी भाग और मैक्सिको की यात्रा की.

दुखद बात यह है कि उस अभियान के दौरान एस्टेबन मारा गया. लेकिन उन्होंने इतिहास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया. एस्टेबन, अमेरिका का पता लगाने वाले पहले अश्वेतों में से एक था. उसकी किंवदंती अभी भी दक्षिण-पश्चिम के मूल अमेरिकीयों की लोककथाओं के बीच जीवित है.
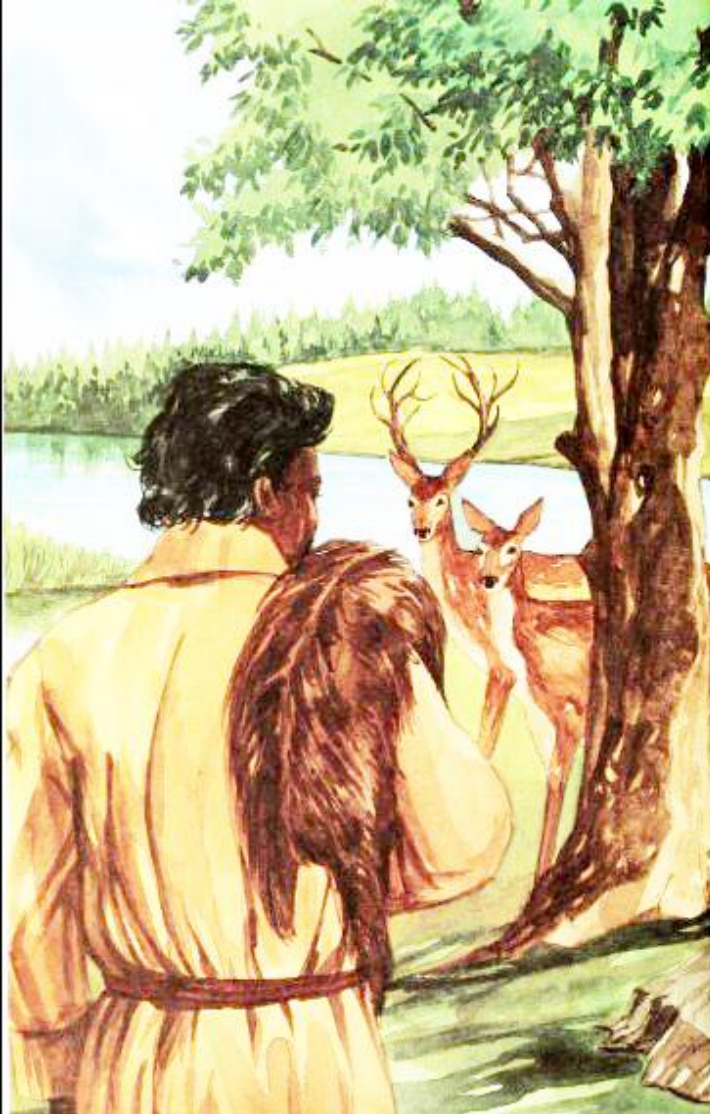
# जीन बैप्टिस्ट पोइंटे ड्यूसेबल

## शिकागो के संस्थापक

## (1745-1818)

"शांत, काला फ्रांसीसी", के नाम से मिडवेस्ट के अमेरिकी मूल-निवासी - जीन बैप्टिस्ट पोइंटे डुसेबल को सम्बोधित करते थे.

ड्यूसेबल का जन्म 1745 के आसपास हैती में हुआ था. उनके पिता एक सफ़ेद, फ्रांसीसी समुद्री कप्तान थे, और उनकी माँ एक अश्वेत दास थीं. मां के निधन के बाद, ड्यूसेबल के पिता स्कूली पढ़ाई के लिए उसे फ्रांस ले गए. ड्यूसेबल अच्छी तरह से शिक्षित हो गया. उसने अंग्रेजी, फ्रेंच और स्पेनिश भाषायें बोलना सीखीं।

बाद में, ड्यूसेबल हैती में लौट आया और अपने पिता की नावों पर एक समुद्री नाविक के रूप में काम करने लगा. जब वह बीस साल का हुआ, तो वो और उसका एक करीबी दोस्त - जैक्स क्लेमोरन, अमेरिका के लिए रवाना हुए. तूफान के दौरान न्यू ऑरलियन्स लुइसियाना के पास उनकी नाव ध्वस्त हो गई. सौभाग्य से, दोनों दोस्तों में से किसी को भी चोट नहीं पहुंची. वे न्यू ऑरलियन्स गए. लेकिन यह उनके लिए अच्छा नहीं रहा.

न्यू ऑरलियन्स में, अश्वेत पुरुषों और महिलाओं को गुलामों के रूप में बेचा जाता था. अगर कोई काला आदमी बिना किसी गोरे व्यक्ति के साथ सड़कों पर चलता तो उस काले व्यक्ति को एक भगोड़ा गुलाम माना जाता था. ड्यूसेबल और क्लेमोरगन को पकड़े जाने और गुलामों जैसे बेचे जाने का डर था. इसलिए उन्होंने न्यू ऑरलियन्स को जल्दी-से-जल्दी छोड़ दिया.

उन्होंने मिसीसिपी नदी तक नाव से यात्रा की. फिर उन्होंने उत्तर की ओर यात्रा की. रास्ते में उन्होंने जानवरों को फँसाया और उनकी खाल (फर) बेंचा. वे जल्द ही सेंट-लुइस, मिसौरी में बस गए और एक सफल फर-व्यापारी बन गए.

थोड़ी समय के बाद, ड्यूसेबल, फोर्ट पेओरिया, इलिनोइस चला गया और उसने अपने फर-व्यापार को जारी रखा. वहां वो किटिहावा नामक एक महिला से मिला. किटिहावा मूल-अमेरिकी थी. वह पोटोवाटोमी कबीले की सदस्य थी. ड्यूसेबल ने एक मूल-अमेरिकी समारोह में किटिहावा से शादी की. यहां तक कि वो उसके कबीले का सदस्य बन गया.

ड्यूसेबल और क्लेमोरगन ने फर बेचा.

ड्यूसेबल अक्सर जानवरों को पकड़ने के लिए कनाडा जाता था. फिर वो फर बेचने के लिए इलिनोइस वापिस लौटता था. हर यात्रा में वो एक ऐसे स्थान पर आराम करता है जिसे मूल अमेरिकी "एशिकागो" कहते थे. कई व्यापारी वहां रुकते थे.

1779 में, ड्यूसेबल को एक विचार सूझा. वो "एशिकागो" में एक ट्रेडिंग-पोस्ट स्थापित करेगा. वहां वो शिकारियों से फर खरीदेगा और उन्हें उनकी जरूरत का सामान बेचेगा.

दो साल बाद, ड्यूसेबल, उनकी पत्नी, बेटे और पोटोवाटमी कबीले के सदस्य "एशिकागो" गए. उन्होंने मांस को स्टोर करने के लिए घर, खलिहान और स्मोक-हाउस बनाए. ड्यूसेबल के घर में पाँच कमरे और एक चिमनी थी. यह उसकी ट्रेडिंग पोस्ट थी. उसमें अन्य भवनों को जोड़ा गया. जल्द ही, "एशिकागो" एक बढ़ती हुई बस्ती बन गई.

वहाँ ड्यूसेबल की पहली संतान - बेटी सुज़ानन पैदा हुई. उसका नाम उसकी माँ के नाम पर ही रखा गया था.

कई व्यापारियों और निवासियों ने "एशिकागो" में आराम किया. सेंट लुइस और मॉन्ट्रियल, कनाडा के बीच वो सबसे अच्छा व्यापारिक पड़ाव था.

1800 में, ड्यूसेबल ने अपने व्यवसाय और ट्रेडिंग पोस्ट को बारह हजार डॉलर में जीन लालिमे को बेच दिया. जॉन किन्ज़ी इस सौदे का साक्षी था. किन्ज़ी ने इस बिक्री प्रमाण पत्र को पंजीकृत भी करवाया. उसने बिक्री को अपने नाम से पंजीकृत किया.

ड्यूसेबल और उसका परिवार वापस पियोरिया, इलिनोइस चला गया. ड्यूसेबल के पास वहां आठ-सौ एकड़ जमीन थी. किटिहावा की नौ साल बाद मृत्यु हो गई और ड्यूसेबल सेंट चार्ल्स, मिसौरी चला गया. 1818 में उसकी मृत्यु हुई.

जिस बस्ती की जीन बैप्टिस्ट फॉन्टे डुसेबल ने नीव डाली थी वहां अब शिकागो शहर शुरू हुआ. यह दुनिया के सबसे बड़े शहरों में से एक है. दुनिया की सबसे ऊंची इमारत, सियर्स टॉवर, वहाँ स्थित है. वहां का हवाई अड्डा दुनिया के सबसे व्यस्त हवाई अड्डों में से एक है.

150 से अधिक सालों तक, डुसेबल को शिकागो शहर में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए मान्यता नहीं दी गई.

इसके बजाय, जॉन किन्ज़ी को शिकागो का संस्थापक कहा जाता रहा.

अंत में, 1968 में महान खोजकर्ता को आधिकारिक रूप से शिकागो शहर के संस्थापक का नाम दिया गया.

शिकागो मिशिगन झील पर स्थित है

शिकागो का क्षितिज.
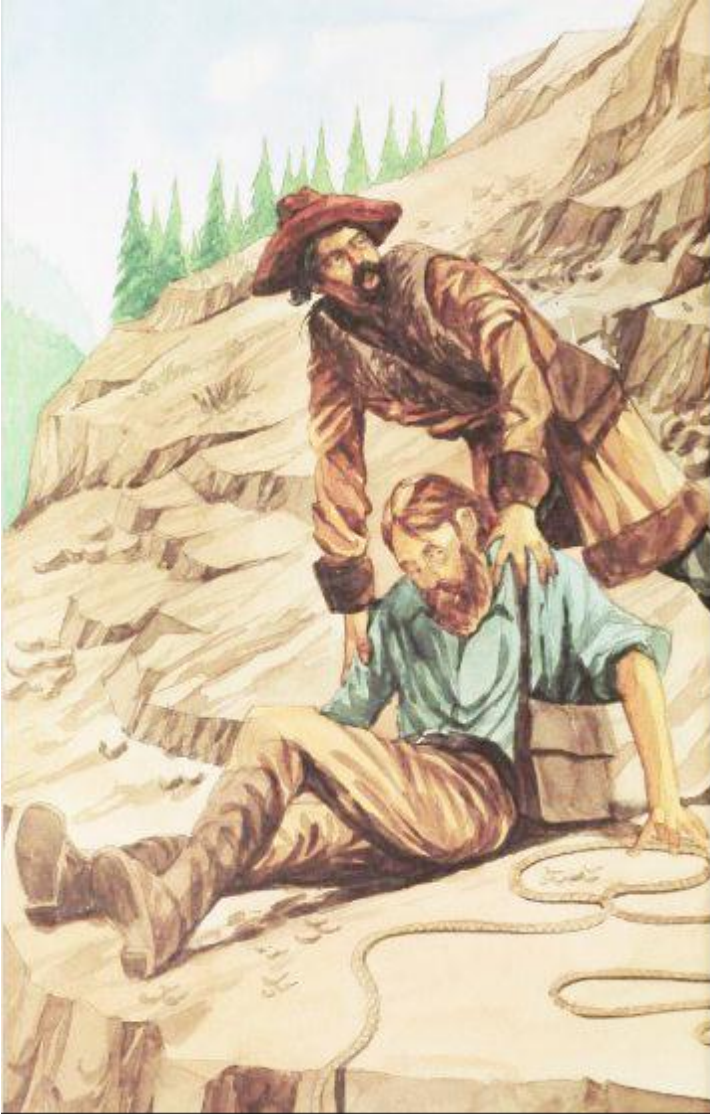
# जेम्स पियर्स बेकवॉर्थ

## अमेरिकन अन्वेषक

**(1798-1866)**

जेम्स बेकवॉर्थ बारह लोगों की टीम में सिएरा नेवादा पर्वत पर सबसे पहले चढ़ गया. वो बड़ी हड़बड़ी में था.

वो लोग सिएरा नेवादा पर्वत पर सोने की तलाश में आए थे. बेकवॉर्थ के दिमाग में कुछ और था. वह पहाड़ों के बीच किसी रास्ते की तलाश में था ताकि लोगों को दूसरी तरफ जाने के लिए पहाड़ पर चढ़ना न पड़े.

जेम्स बेकवॉर्थ एक गिरे हुए दोस्त की मदद करते हुए .

पूर्वी कैलिफोर्निया की पर्वत श्रृंखला चार सौ मील तक फैली हुई है. उसे पार करना बहुत मुश्किल था.

बेकवॉर्थ को वह रास्ता मिला जिसकी वो तलाश में था. यह वो सबसे अद्भुत दृश्य था जिसे उसने कभी देखा था. वो एक सुंदर, हरी-भरी घाटी थी जिसमें हर जगह कई तरह-तरह के फूल उग रहे थे. वहां शानदार पक्षी थे, और सभी प्रकार के जंगली जानवर भी. बेकवॉर्थ को इस बात का पक्का अंदाज़ था कि उसने कुछ विशेष खोज की थी. उसने कैलिफोर्निया में सिएरा नेवादा पर्वत से लेकर लॉन्ग वैली तक का एक रास्ता ढूंढ लिया था. यह किसी अन्य रास्ते की तुलना में सबसे छोटा मार्ग था.

बाद के वर्षों में, इसे "बेकवॉर्थ का दर्रा" नाम दिया गया. हजारों लोगों ने और सोना खनिकों ने कैलिफोर्निया जाने के लिए इस मार्ग का उपयोग किया. बेकवॉर्थ अपने इस रास्ते पर पहली वैगन ट्रेन भी लेकर गया. बाद में, पश्चिमी-प्रशांत रेल ने भी इसी मार्ग का इस्तेमाल किया.

कई सालों तक बेकवॉर्थ पास की एक घाटी में रहता था. उसने वहां एक होटल और ट्रेडिंग-पोस्ट चलाई. लेकिन फिर वो दुबारा यात्रा के लिए बेचैन हो गया. बेकवॉर्थ दिल से एक साहसी अन्वेषक था.

जेम्स पियर्स बेकवॉर्थ 1798 में फ्रेडरिक काउंटी, वर्जीनिया में पैदा हुआ था. उसके पिता गोरे थे और कई अश्वेत गुलामों के मालिक थे. उसकी मां एक काली दास थीं. जब वह सात या आठ साल का था, तब उसके पिता पूरे परिवार को सेंट लुइस, मिसौरी ले गए.

जब युवा जेम्स चौदह वर्ष का हुआ, तो उसके पिता ने उसे जॉर्ज कैस्टर नामक एक श्वेत लोहार के साथ रहने और काम सीखने के लिए भेजा. पहले तो जेम्स लोहार नहीं बनना चाहत था. लेकिन बाद में वो उस काम को पसंद करने लगा.

जब जेम्स उन्नीस वर्ष का था, तब उसे एक युवा गुलाम लड़की से प्यार हो गया. वो अपनी दोस्त से मिलने देर रात तक बाहर रहता था. लोहार कैस्टर को यह बिल्कुल पसंद नहीं था. कैस्टर के सख्त नियम-कानून थे जिन्हें जेम्स को मानना था. दोनों लोगों में इसको लेकर काफी लड़ाई चलती थी.

एक दिन जेम्स और लोहार में झगड़ा हो गया. जेम्स ने लोहार को मारा और फिर वो भाग गया. उसके बाद वो कभी घर वापिस नहीं लौटा. जेम्स ने कुछ समय तक नमक की खान में काम किया. उसने न्यू ऑरलियन्स की यात्रा की, और फिर सेंट लुइस वापस आया.

एक दिन जनरल विलियम हेनरी एशले नाम का एक आदमी कुछ अन्य लोगों के साथ पश्चिम में शिकार के लिए जा रहा था. वहां वो जानवरों को फँसाता था. जानवरों के फर पूर्व में बहुत कीमत में बिकते थे. बेकवॉर्थ भी उसी समूह में शामिल हो गया. इस शुरुआत के बाद बेकवॉर्थ देश के सबसे महान फ्रंटियर्स में से एक बना.

जेम्स पियर्स बेकवॉर्थ

अपने जीवनकाल में, उसने न्यू- मैक्सिको, एरिज़ोना, फ्लोरिडा और मैक्सिको की यात्रा की. छह साल तक, वह मूल -अमेरिकी लोगों के साथ मोंटाना में रहा जिसे "क्रो" कहा जाता था. यहां तक कि वो उनका चीफ बन गया. इस साहसी फ्रंटियरमैन ने उनके साथ कई लड़ाइयों लड़ीं और बच निकला. फिर उसने वो काम छोड़ दिया और नए रोमांचक कारनामों की तलाश में रवाना हुआ.

1866 में बेकवॉर्थ की मृत्यु हो गई. सेना ने बेकवॉर्थ को "क्रो" के साथ शांति बहाल करने के लिए भेजा था. किंवदंती है कि कई "क्रो" ने बेकवॉर्थ को वर्षों तक अपने प्रमुख के रूप में याद किया था. उन्होंने फिर से बेकवॉर्थ को उनका प्रमुख बनने का निमंत्रण दिया पर उसने मना कर दिया. शायद इसीलिए उसे जहर दिया गया. लेकिन इस कहानी की कभी पुष्टि नहीं हुई.

कई अश्वेत खोजकर्ता और फ्रंटियर्समैन ने पश्चिम को खोलने में अपना योगदान दिया. जेम्स फेयरस बेकवॉर्थ उनमें से सबसे महान अश्वेत अन्वेषक थे.

बेकवॉर्थ का मार्ग दिखाने वाला मानचित्र

बेकवॉर्थ की (स्टिरप) और बुलेट मोल्ड
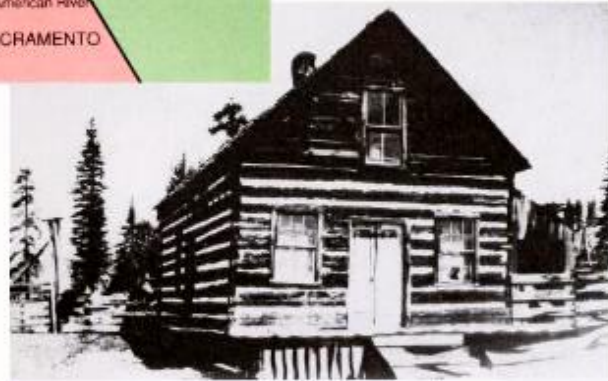
बेकवॉर्थ द्वारा खोजे गए मार्ग में केबिन

ऐसा माना जाता है कि यह लकड़ी की मेज बेकवॉर्थ ने बनाई थी

# मैथ्यू ए. हेंसन

## उत्तरी ध्रुव एक्सप्लोरर

## (1866-1955)

पृथ्वी के सबसे उत्तरी भाग में बर्फ़ीला तापमान होता है. वहां पूरे क्षेत्र पर बर्फ छाई रहती है. यह उत्तरी-ध्रुव (नार्थ पोल) है.

1893 में, कोई भी उत्तरी-ध्रुव पर नहीं गया था. उस वर्ष एडमिरल रॉबर्ट पीयर और मैथ्यू हेंसन उत्तरी-ध्रुव तक पहुँचने के लिए निकले. लेकिन वे असफल रहे. उन्होंने 1898 में फिर से कोशिश की लेकिन फिर असफल रहे. 1909 में उन्होंने एक बार फिर कोशिश की.

फिर एक ग्रुप - पीयर, हेंसन और जिसमें रॉबर्ट हैरियट भी शामिल था, ने उत्तरी-ध्रुव के लिए उड़ान भरी.

वे न्यूयॉर्क शहर से कनाडा तक लंबी यात्रा पर रवाना हुए. इसके बाद, उन्होंने कैंप कोलंबिया, कनाडा में एक बेस कैंप स्थापित किया. यह शिविर उत्तरी-ध्रुव से लगभग 450 मील की दूरी पर था. मार्च 1909 में समूह ने भोजन और आपूर्ति के साथ कुत्तों द्वारा खींची फिसल-गाड़ियां (स्लेज) तैयार कीं. फिर वे ध्रुवीय समुद्री बर्फ पर, उत्तरी-ध्रुव की ओर बढ़े.

मैथ्यू ए. हेंसन

एडमिरल रॉबर्ट पीयर
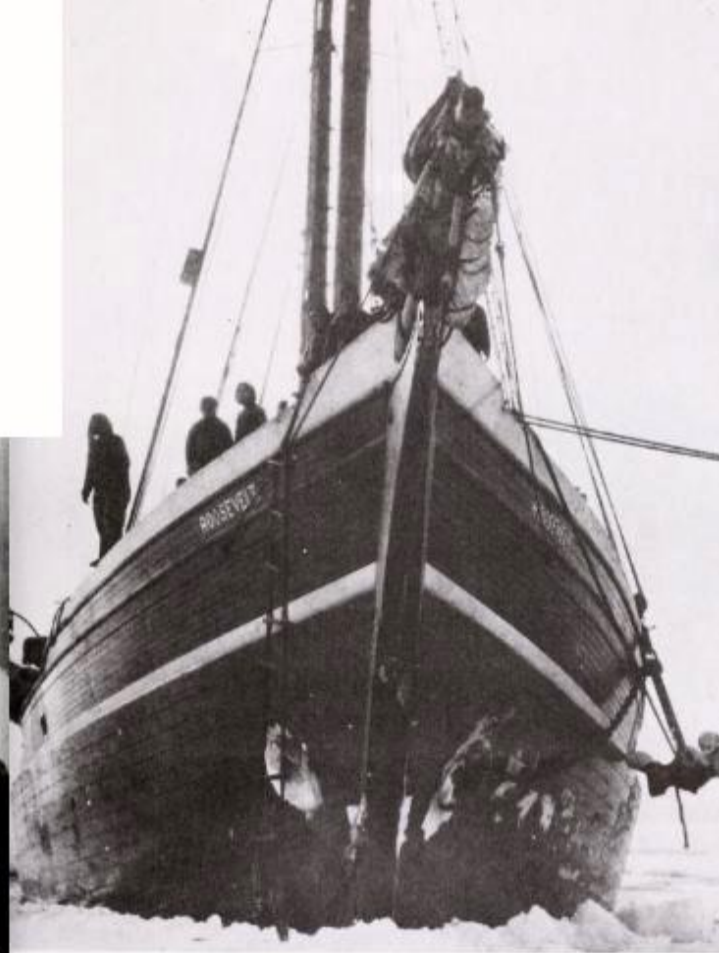
रूजवेल्ट जहाज़, हेंसन और उनकी पार्टी को न्यूयॉर्क शहर से उत्तरी-ध्रुव तक ले गया

कुछ लोगों को कठोर ठंड के मौसम का सामना करना पड़ा. उन्हें शिविर में लौटना पड़ा. अंत में, पीयर ने यात्रा के अंतिम चरण के लिए हेंसन और चार इनुइट गाइड - ऊटाह, सेग्लू, केगवा और ओओक्वाय को चुना. उस समय अप्रैल 1909 की शुरुआत थी. वे वास्तव में पहली बार उत्तरी ध्रुव के बहुत करीब पहुंचे.

हेंसन, पीयर और उनके गाइड ने बर्फ पर यात्रा की. पेरी के पैर घायल हो गए थे; इसलिए वो हेंसन जितनी तेज़ नहीं चल सकता था. इस कारण हेंसन और उनके गाइड आगे चले - और फिर एक भयानक आपदा घटी.

रास्ते में, मैथ्यू हेंसन ने बर्फ की एक पतली चादर वाली ज़मीन पर पैर रखा. अचानक बर्फ टूट गई और हेंसन नीचे बर्फीले पानी में गिर गया. वहां पानी का तापमान -15 डिग्री फ़ारेनहाइट था. केवल कुछ ही मिनटों में मैथ्यू हेंसन की ठंड से मौत हो जाती.

अचानक, हेंसन के हुड को किसी ने खींचा. कोई उसे पानी में ऊपर खींच रहा था. वो ऊटाह उसका गाइड था. जल्दी से, ऊटाह ने हेंसन को अपने गीले बूट और कपड़े उतारने में मदद की. पानी के बर्फ में बदल जाने से पहले ऊटाह ने हेंसन के पानी को हिला दिया. इसके बाद हेंसन, ऊटाह, और सेगलो आगे बढ़े. एडमिरल पीयर, एग्गवाह और ओओक्वा उनके पीछे थे. वे उत्तरी ध्रुव से सिर्फ पैंतीस मील से भी कम दूरी पर थे.

हेंसन पोल के करीब और करीब पहुंच गया. अंत में, वह रुक गया. उसने चारों ओर देखा. क्या वह उत्तरी-ध्रुव पर पहुँच गया था? हेंसन ने वहां शिविर लगाया और पीयर की प्रतीक्षा की.

जब एडमिरल पहुंचे, तो उन्होंने विभिन्न बिंदुओं से अवलोकन किया. वो शिविर में लौटकर आये और उन्होंने एक घोषणा की. उनका शिविर, उत्तरी-ध्रुव के बिल्कुल ठीक ऊपर था. फिर हेंसन और चार गाइड एक रिज पर खड़े हुए और उन्होंने उनकी तस्वीर खींची. हेंसन ने अमेरिकी झंडा उठाया. उसे गर्व महसूस हुआ. यह एक बेहद रोमांचक क्षण था.

मैथ्यू हेंसन का जन्म 1866 में चार्ल्स काउंटी, मैरीलैंड में हुआ था. उनकी मां के निधन के बाद, वो वाशिंगटन में अपने एक चाचा के साथ रहता था. हेंसन को हमेशा से ही रोमांच पसंद था. जब वह चौदह वर्ष का था, तो उसने "केटी नाइन" नामक एक जहाज पर एक केबिन बॉय के रूप में काम किया. वो पांच साल तक जहाज़ के नाविक भी था.

उत्तरी ध्रुव का एक प्रारंभिक चार्ट

खोजकर्ता अपने स्लेज और कुत्ते के साथ

हेंसन को आराम करने में समय लगा

1887 में हेंसन की मुलाकात पीयर से हुई. उस समय हेंसन वाशिंगटन में एक कपड़े की दुकान में काम कर रहा था. पीयर ने तुरंत हेंसन को पसंद किया. पीयर ने हेंसन को अपने निजी नौकर के रूप में नौकरी की पेशकश की. हेंसन कोई नौकरी नहीं करना चाहता था. लेकिन उस यात्रा में उसकी रुचि थी वो पीयर ने निकारागुआ, दक्षिण अमेरिका जाने के लिए बनाई थी. इसमें उसे फिर से यात्रा करने का मौका मिलता. फिर बीस से अधिक सालों तक दोनों व्यक्तियों ने एक साथ कई यात्राएँ कीं.

7 अप्रैल, 1909 को, महान खोजकर्ताओं ने उत्तरी-ध्रुव से अपनी वापसी यात्रा शुरू की. वे अपनी जीत को लेकर बहुत खुश थे.

रॉबर्ट ई. पीयर बहुत प्रसिद्ध हुआ. पीयर को नेशनल जियोग्राफिक सोसाइटी ने स्वर्ण पदक से सम्मानित किया. रॉबर्ट बार्टलेट को भी पदक से सम्मानित किया गया, हालांकि वो उत्तरी-ध्रुव की अंतिम यात्रा में नहीं था. मैथ्यू हेंसन को बिल्कुल नजरअंदाज किया गया.

कई वर्षों तक श्वेत दुनिया ने हेंसन की महान उपलब्धि को नहीं पहचाना. हालांकि, काले समुदाय ने उसे सम्मानित किया और उसे कई पुरस्कार प्रदान किए.

आखिरकार, 28 जनवरी, 1941 को, कांग्रेस ने उत्तरी-ध्रुव अभियान पर जाने वाले सभी पुरुषों के लिए एक पदक ज़ारी किया. एक साल बाद, हेंसन को अमरीकी सरकार के उत्कृष्ट सेवा के लिए रजत पदक प्रदान किया.

1955 में इस महान खोजकर्ता की मृत्यु हुई. 6 अप्रैल,1988 को उनके अवशेषों को अर्लिंग्टन नेशनल सेरेमनी में पूरे सैन्य सम्मान के साथ पुन: दफनाया गया. एक महान अश्वेत अमेरिकी के लिए यह सबसे उपयुक्त सम्मान था.

मैरीलैंड राज्य ने इस महान खोजकर्ता को इस पदक से सम्मानित किया.

## मॅई सी. जेमिसन

**स्पेट एक्सप्लोरर**

**(1956 में जन्मी)**

फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर में, वैज्ञानिक एक रोमांचक लॉन्च की तैयारी कर रहे थे. लॉन्च पैड पर स्पेस शटल "एंडेवर" था. उसकी नाक सीधे बादलों की ओर थी. अंदर, सात अंतरिक्ष यात्री अपनी सीटों पर बैठे थे. प्रत्येक अंतरिक्ष में एंडेवर के टेक-ऑफ करने का इंतजार कर रहा था. अंतरिक्ष यात्रियों में से एक - मॅई सी. जेमिसन थी.

जब मॅई ग्रेड स्कूल में थी, तब उसने अंतरिक्ष यात्री होने और अंतरिक्ष में यात्रा करने का सपना देखा था.
12 सितंबर 1992 को उसका यह सपना सच होने वाला था. उलटी गिनती शुरू हो गई. "10. 9. 8.." कई चीजें गलत भी हो सकती थीं. लॉन्च में देरी हो सकती थी .
"7. 6. 5. 4..“

एक बार, एक अंतरिक्ष यान में टेक-ऑफ के ठीक बाद तुरंत विस्फोट हो गया था. उसमें सवार सभी अंतरिक्ष यात्री मारे गए.  "3. 2. 1. लिफ़्ट-ऑफ़!“

एंडेवर उठने लगा. फिर, यह बादलों के ऊपर चला गया. अंतरिक्ष केंद्र के लोगों ने खुशी मनाई. वो प्रक्षेपण सफल रहा था. मॅई  जेमिसन की यात्रा शुरू हो गई थी.

मॅई का जन्म देकतुर, जॉर्जिया में हुआ था. जब वो बहुत छोटी थी, तब उसका परिवार शिकागो चला गया था. उसके माता-पिता ने उससे कहा कि वह मेहनत से पढ़ाई करे और जितना बन सके उतना सीखे. मॅई को सीखना अच्छा लगा. उसने पुस्तकालय में कई घंटे बिताए और विज्ञान और विज्ञान कथाओं के बारे में किताबें पढ़ीं.

मॅई 1960 के दशक में बड़ी हुई. उस काल में पूरा देश अंतरिक्ष यात्रा और अंतरिक्ष अन्वेषण को लेकर उत्साहित था. कई लड़कों-लड़कियों की तरह, मॅई भी एक अंतरिक्ष यात्री बनना चाहती थी. लेकिन अमेरिका में तब तक कोई महिला अंतरिक्ष यात्री नहीं बनी थी. कोई भी अश्वेत, अंतरिक्ष यात्री नहीं था. तो क्या उसे  कभी मौका मिलेगा? मॅई बस अंतरिक्ष में खोज के सपने देखती रही. अब उसे कोई भी नहीं रोक सकता था.

जब वो सोलह वर्ष की थी, तब मॅई ने हाई स्कूल पास किया. उसके ग्रेड बहुत अच्छे थे. स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी ने उन्हें छात्रवृत्ति दी और वो वहां पढ़ने चली गई. मॅई एक डॉक्टर बनना चाहती थी, इसलिए वह मेडिकल स्कूल गई. बाद में मॅई अन्य देशों में जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए "पीस कॉर्प्स" में शामिल हुई. उसने पश्चिम अफ्रीका में सिएरा लियोन और लाइबेरिया में काम किया. उसने मेडिकल स्कूल में जो कुछ सीखा उसका इस्तेमाल वहां के लोगों की मदद के लिए किया.

(ऊपर) एस्ट्रोनॉट जेमिसन और साथी अंतरिक्ष यात्री डेविस "एंडेवर" में प्रशिक्षण लेते हुए

लेकिन मॅई अभी भी एक अंतरिक्ष यात्री बनने का सपना देखती थी. वो 1985 में अमेरिका लौट आई. उसने नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA) के अंतरिक्ष यात्री कार्यक्रम में आवेदन किया. मॅई ने उत्तर की प्रतीक्षा की. उसी समय अंतरिक्ष यान "चैलेंजर" अंतरिक्ष में जाते समय फट गया था. उसके सभी सात अंतरिक्ष यात्री मारे गए थे. उसके बाद नासा ने नए अंतरिक्ष यात्रियों को लेना बंद कर दिया था.

(दाएं) वैज्ञानिक शोध कर रही डॉ. जेमिसन

लेकिन मॅई को डर नहीं लगा. जब अंतरिक्ष यात्री कार्यक्रम दुबारा शुरू हुआ तो उसने फिर से आवेदन किया.

इस बीच, उसने कैलिफोर्निया की CIGNA हेल्थ योजना और लॉस एंजिल्स की स्नातक इंजीनियरिंग कक्षाओं में भाग लिया. अगस्त 1987 में, नासा के एक व्यक्ति ने जेमिसन को एक बड़ी खबर सुनाई. जेमिसन को अंतरिक्ष यात्री कार्यक्रम के लिए चुना गया था. वो बहुत खुश थी. कार्यक्रम में लगभग दो हजार लोगों ने आवेदन किया था. उनमें से केवल पंद्रह को ही चुना गया था. मॅई जेमिसन ने वास्तव में खुद को, विशेष महसूस किया.

प्रशिक्षण कार्यक्रम कठिन था. अंतरिक्ष यात्रियों को बहुत मजबूत और फिट होना चाहिए, इसलिए वे व्यायाम करते हैं. वे गणित, पृथ्वी संसाधन, मौसम विज्ञान, मार्गदर्शन और नेविगेशन, खगोल विज्ञान, भौतिकी और कंप्यूटर का भी अध्ययन करते हैं. अंतरिक्ष यात्रा के लिए तैयार होने के लिए उन्हें बहुत कुछ सीखना होता है.

एक वर्ष के लिए प्रशिक्षण के बाद मॅई सी. जेमिसन आधिकारिक तौर पर एक अंतरिक्ष यात्री बनी. वो अंतरिक्ष में यात्रा करने के लिए बेहद उत्सुक थी, लेकिन उसे अपनी बारी का इंतजार करना पड़ा. आखिरकार, 1991 में, उसे "एंडेवर" पर अंतरिक्ष उड़ान के लिए चुना गया.

(ऊपर) डॉ. जेमिसन एक चिकित्सकपरीक्षण के दौरान "एंडेवर" पर.

(नीचे) डॉ. जेमिसन एक अंतरिक्ष मिशन के दौरान शून्य-गुरुत्वाकर्षण का परीक्षण करती हुई.

अब मॅई को यात्रा के लिए खुद को प्रशिक्षित करना था. उसे विज्ञान मिशन विशेषज्ञ के रूप में चुना गया था. उसे अंतरिक्ष में रहते हुए प्रयोग करने थे.

वो दिन आखिरकार आया. जैसे ही "एंडेवर" पृथ्वी से दूर गया, मॅई सी. जेमिसन अंतरिक्ष में शोध करने वाली पहली अश्वेत महिला बनीं.

इस आत्मविश्वासी अमेरिकी महिला के लिए वो एक महान दिन था. वह बहुत खुश थी. उसका सपना सच हो गया था.

**समाप्त**